पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द से संवेदना तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

हिन्दी हमारी पहचान हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

रचनाकार :-
अजय पाण्डेय

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका – अजय पाण्डेय

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या निम्नवत हैं—

1. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव—

आजकल स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा को रोजगार मात्र पाने का साधन मान लिया गया है और जिसके फलस्वरूप शिक्षा-क्षेत्र के शिक्षक अपने-अपने विषयों के पठन-पाठन पर ध्यान देते।

इसका बुरा प्रभाव होता है कि एक ही विषय को लेकर आगे चलकर बच्चों में पठन-पाठन के प्रति रुचि घटने लगती है।

दूसरी ओर, सरकारें भी गलतियाँ कर रही हैं। अपने वोट बैंक के खातिर स्कूल-कॉलेज के बच्चों में मुफ़्त मोबाइल/टैब आदि का वितरण कर बच्चों के हाथ से किताबें छीनी जा रही हैं। जबकि मोबाइल/टैब कुछ भी यंत्र किताब का स्थान नहीं ले सकता है।

इसका सबसे बड़ा हानि है कि बौद्धिक स्तर से कमज़ोर अधिकांश लड़के/लड़कियाँ मोबाइल/टैब का गलत इस्तेमाल कर अपना जीवन बर्बाद कर रहे हैं।

मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि मोबाइल के गलत इस्तेमाल से परिवार टूट रहे हैं, बच्चे माँ-बाप के कंट्रोल से बाहर हो रहे हैं। ब्लैकमेलिंग का शिकार हो रहे हैं। आदमी किसी का परख सही नहीं हो पा रहा। आधुनिकता हावी है। वंश-परंपरा चरमरा रही है। कम उम्र के बच्चे भी युवा जैसे हरकत कर रहे हैं। लोगों की नीचता समाप्त होती चल रही है। बेडरूम/रसोई और यहाँ तक कि वॉशरूम तक शेयर हो रहे हैं। चंद नासमझी से परिवार की जानें जा रही हैं। किसी तरह के ऊँच-नीच हो जाने का भय युवाओं में नहीं रह गया है।

दूसरे शहरों में बच्चों को पढ़ा रहे माँ-बाप को हर पल अपने बच्चों की फ़िक्र रहती है। अखबारों में छपते अनेकों नेगेटिव खबरें माँ-बाप को परेशान किए रहती हैं। संशय की जिंदगी जी रहे लोग रोज मरते हैं, रोज जीते हैं। आशंकित और खौफनाक ख्याल बेचैन किए रहता है।

मोबाइल कंपनियों की चाल में उलझी सरकारें और परिवार मोबाइल से होने वाली हानियों से किनारे होकर तमाशा देख रहे हैं। यही हाल रहा तो हम भविष्य में सजने वाली सामाजिक व्यवस्था को खो देंगे।

बचाव

1. सबसे पहले तो स्कूल/कॉलेज में पठन-पाठन के अतिरिक्त व्यावहारिक ज्ञान/ बौद्धिक ज्ञान और अन्य मोटिवेशनल क्लासेज की व्यवस्था अनिवार्य हो।

2. सरकारें जो टैब देती हैं, उस टैब में मात्र शैक्षणिक डेटा हो। आम मोबाइल की तरह न हो।

3. माँ-बाप भी बच्चों को अच्छे संस्कार देने और परवरिश में कमी न करें। गलत क्या, सही क्या, इसे समझाएँ। माँ-बाप भी खुद में नियंत्रित रहें। घर का माहौल दोस्ताना एवं खुशनुमा हो। अपनी क्षमता के अनुरूप बच्चों को आगे ले चलें। बच्चों को ज़िद्दी होने से बचाएँ।

महीने में एक बार घर में पूजा-पाठ कराएँ, जिससे कि आत्मिक शुद्धि बनी रहे। पिकनिक जाएँ तो सब साथ जाएँ। बच्चों की दोस्ती कैसे लोगों से है, इसका अवलोकन करें। बुरे बच्चों से दूर रखें।

याद रखिए—आपका व्यवहार ही आपका दोस्त है, दुश्मन है। आप सबसे अच्छा व्यवहार कर दुनिया जीत सकते हैं।

दूसरी बड़ी समस्या है—मौलिक अधिकार का हनन और अभिव्यक्ति की आज़ादी की आड़ में गाली-गलौज, किसी का चरित्र हनन का प्रयास आदि हैं।

फूहड़पन और नंगापन चरम पर है। पर्दे की चीज़ों को भी सामान्य मानकर दैहिक प्रदर्शन को अपनी उपलब्धि मान चल रहे, जिससे समाज भी ढीठ होता जा रहा है। शर्म और हया को पीठ पीछे बाँध ले चल रहे हैं और समाज तमाशबीन बनकर रह गया है।

कुसंस्कारी और विचार से नंगे लोगों का प्रभाव समाज पर हावी है। भले ही रिश्ते टूट रहे हों या जानें जा रही हों, पर बेमेल रिश्ते बनाने की होड़ मची हुई है।

घर से भागकर गई या भगाकर लाई गई लड़कियों से समाज को परहेज नहीं रह रहा, बल्कि यह एक उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है। नतीजा है कि एक विकृत और विकलांग समाज की स्थापना हो रही है, जो भविष्य के लिए खतरनाक संकेत है।

पढ़ी-लिखी लड़कियाँ और लड़के इस तरह से सामाजिक और सांस्कृतिक गरिमा को तोड़े चल रहे हैं।

अगर देखा जाए तो उच्च धनाढ्य परिवारों को नीचे गिरने का कोई भय नहीं रहता है। उनकी फूहड़ता भरी जिंदगी भी आदर्श जिंदगी कहलाती है। और जो सबसे निचले पायदान पर रहते, उन्हें किसी तरह के सम्मानजनक जिंदगी से कोई मतलब नहीं रहता है।

सभ्य समाज का ठेका तो मध्यमवर्गीय परिवारों ने संभाल रखा है और उच्च तथा निम्न वर्ग के कुकृत्यों का बुरा प्रभाव मध्यम वर्ग के परिवारों पर पड़ रहा है।

संवैधानिक सभी नियमों, कानून, संस्कार और संस्कृति की रक्षा मध्यमवर्गीय परिवारों को ही करना है। समाज की रीढ़ यह मध्यमवर्गीय परिवार उच्च और निम्नवर्गीय परिवारों के कुकृत्यों को खुद में समेटे हुए है और दमघोंटू जिंदगी जी रहा है।

<u>बचाव के उपाय</u>

समाज के इस बिगड़ते स्वरूप को और हवा देने में परिवार की जवाबदेही कम नहीं है।

मध्यमवर्गीय परिवारों को चाहिए कि वो निम्नवर्गीय और उच्च वर्गीय परिवारों की परवाह किए बिना अपनी संतानों की परवरिश में अच्छे संस्कारों को शामिल करें। गलत-सही को समय रहते समझाएँ।

- अजय पाण्डेय 'बेबस'

लेखक परिचय

नाम – अजय पाण्डेय ‘बेबस’

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.......**अजय पाण्डेय**.......जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।
उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...